National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2019; 1(23): 27-31
© 2019 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.समणी संगीत प्रज्ञा
सहआचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूँ-341306, राजस्थान

Correspondence:
डॉ.समणी संगीत प्रज्ञा
सहआचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूँ-341306, राजस्थान

उत्तर एवं मध्य भारतीय प्राकृत अभिलेखों का वाक्य-तत्त्व

डॉ.समणी संगीत प्रज्ञा

सार- भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। प्राचीन काल से लेकर आज तक विश्व में जितनी भी भाषाएं प्रचलित रही हैं, उनके लिखने की शैली भले ही भिन्न रही है, किंतु अर्थ निस्पादन करने में सभी भाषाएं समर्थ रही हैं। हमारे देश भारत में भी इस समय बहुत सी भाषाएं प्रचलित हैं। सब का ध्वनि- तत्त्व, रूप-तत्त्व समान नहीं हैं, किंतु अर्थ बोध कराने में सभी भाषाएं समर्थ हैं। भाषा जब वाक्य की भूमिका में होती है, तब उसका स्वरूप वाक्यों के माध्यम से व्यवस्थित होता है। पद भी वाक्य में प्रयुक्त होकर अपना अभीष्ट अर्थ प्रकट करते हैं। वाक्य में पदों या शब्दों का स्थानिक महत्त्व भी होता है, इसलिए अर्थ बोधन में स्थान निर्धारण भी प्रमुख होता है।

कुंजी - वाक्य की परिभाषा एवं स्वरूप, वाक्य एवं पद का संबंध, वाक्य का विभाजन, वाक्यों के प्रकार, सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य, अर्थमूलक भेद, क्रियामूलक भेद, शैलीमूलक भेद।

पुरातात्त्विक साक्ष्यों में अभिलेख सबसे प्रामाणिक साक्ष्य है। अभिलेखं में लिखित वाक्यों से तात्कालिन ऐतिहासिक घटनाओं के साथ ही साथ साहित्यिक एवं भाषातात्त्विक विवरण भी प्राप्त होता है। जिसके आधार पर भाषा के विभिन्न रूपों का अध्ययन किया जाता है। इसमें ध्वनि-तत्त्व, रूप-तत्त्व, अर्थ-तत्त्व और वाक्य-तत्त्व के अध्ययन प्रमुख हैं। प्रस्तुत अध्ययन का विषय वाक्य-तत्त्व है। अन्य तत्त्वों का पूर्व में विवरण दिया जा चुका है। वाक्य-तत्त्व में वाक्यों की रचना, वाक्यों के भेद, वाक्यों में परिवर्तन, वाक्यों में पदक्रम और वाक्यों के विश्लेषण प्रमुख हैं। वाक्य-तत्त्व में भाषा में प्रयुक्त विभिन्न पदों का परस्पर संबंध का विचार किया जाता है। इसलिए वाक्य-तत्त्व में वाक्य का स्वरूप, वाक्य की परिभाषा, वाक्य की रचना, वाक्य के अनिवार्य तत्त्व, वाक्य में निकटस्थ अवयव, परिवर्तन की दिशाएं, परिवर्तन के कारण आदि क्रम बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं।

वाक्य में शब्द अपना अर्थ तभी देते हैं, जब उनका संयोजन ठीक से हो, पदविज्ञान व वाक्य विज्ञान भिन्न हैं। इनमें मुख्य अंतर यह है कि पदविज्ञान में पदों की रचना का विवेचन होता है। इसलिए उसमें कारक, विभक्ति, वचन, लिंग, काल, पुरूष आदि के बोधक शब्द किस प्रकार बनते हैं, इस पर विचार किया जाता है। वाक्य-तत्त्व में पदों का कहां व किस प्रकार प्रयोग हो, उनको वाक्य में संयोजन करने से अर्थ में क्या अंतर होता है आदि विषयों का विवेचन होता है। तात्त्विक दृष्टि से ध्वनि, पद और वाक्य में अंतर है। ध्वनि का संबंध उच्चारण से हैं। उच्चारण करने में शारीरिक व्यापार प्रमुख होता है। पद में ध्वनि और सार्थकता दोनों का होना आवश्यक है। पद में शारीरिक व मानसिक दोनों तत्त्वों के समन्वय से वह वाक्य में प्रयोग के योग्य बन जाता है।

विचार मन का कार्य है अतः पद में मानसिक व्यापार भी समाहित है। वाक्य में विचार, विचारों का समन्वय, सार्थक अभिव्यक्ति ये सभी संबंध हैं। इस प्रकार ध्वनि उच्चारण से संबंधित है। इसमें शारीरिक तत्त्व मुख्य है। पद में शारीरिक व मानसिक दोनों तत्त्व हैं। वाक्य मानसिक पक्ष की पूर्ण प्रधानता के कारण भाषा का अभिव्यक्त रूप है। प्रश्न उठता है कि वाक्य क्या है?

Scanned by CamScanner